{भारत माँ के सच्चे सपूत}

भारत मेरा देश महान, दो सदियों तक रहा गुलाम
क्रांति की चिंगारियों से, मिला इसे एक नया मुकाम
आज़ाद हुआ देश हमारा, मिली हमें आज़ादी
लाखों वीरों के बलिदान की, है ये एक सच्ची कहानी।

आज भी,
तिरंगे के सम्मान के खातिर, तत्पर है हर एक जवान
प्राण भी न्योछावर करने पड़े तो, नहीं झिझकता हमारा जवान
दुश्मन को दिखाकर अपने, दृढ़ साहस का प्रतिमान
प्रज्वलित कर देते हैं अपने, सम्मानित राष्ट्र का स्वाभिमान।

पर,
सच्ची देशभक्ति तो तभी कहलाएगी
जब,
रोटी, कपड़ा, मकान जैसी सुविधाएँ हर जन तक पहुँच पाएंगी
धर्म-जाति, रंग-रूप, वेशभूषा पर, जब न कोई बैर होगा
अहिंसा परमो धर्म, अतिथि देवो भव: जैसे आदर्श,
हर जीवन का मोल होगा।

आओ हम सब मिलकर ये संकल्प करें,
जो मा न सके, उसका रक्षक करें
जो मा सकते हैं, उसका प्रयत्न करें
शक्ति, शान्ति और उन्नति के प्रतीक तिरंगे का सम्मान करें
जन-गण-मन के गायन के साथ, देशभक्ति का एक नया अध्याय रचें।